सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

प्रथम सप्ताह

2012-2013 की अव्यक्त वाणियों का संक्षिप्त सार

स्वमान- मैं बाप समान संतुष्टमणि हूँ।

- संतुष्टमणि का प्रकाश सारे विश्व में फैलता है। जहाँ संतुष्टता है, वहाँ सर्व शक्तियाँ स्वत: चली आती हैं। संतुष्ट आत्मा सर्व को और बाप को अति प्रिय लगती हैं। जरा सोचें, भगवान को पाकर भी यदि हम संतुष्ट नहीं हुए तो आखिर कब होंगे ?

2 . योगाभ्यास - (अ) बाबा से बातें करना कि बाबा, आपको पाकर हम पूरी तरह संतुष्ट हुए आप मिले तो हमें सारा संसार मिल गया हम दिल से यह गीत गाते रहें कि तुम्हें पाकर हमने जहां पा लिया है, जमीन तो जमीन आसपास पा लिया है।

(ब) बाबा के स्वरूप पर हम अपनी बुद्धि को लंबा समय एकाग्र करें परमधाम जाकर बाबा को टच करें और वापस अपने देह में प्रवेश करें बार-बार यह खेल ड्रिल करें।

3 . धारणा -संतुष्टता -संतुष्टता में ही सच्चा सुख है। हम सेवाओं में भी संतुष्ट रहें और स्व-पुरूषार्थ में भी । संतुष्ट रहने से ही स्थिति एकाग्रचित होती है। मन कुछ पाने के लिए इधर-उधर भटकता नहीं ।

4 . चिन्तन - संतुष्टता क्या है? - इच्छा और आवश्यकता में क्या अंतर है? - असंतुष्टता कहाँ-कहाँ आती है ?- सदा संतष्ट कैसे रहें ?- संतुष्टता के संबंध में बाबा के महावाक्य ।

5 .तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों जो कुछ हमारे पास है, उसमें पूर्ण संतुष्ट रहकर निरंतर आगे बढ़ते रहें। यदि ऐसा करेंगे तो जीवन में संपूर्ण सुख रहेगा और शांति रहेगी। हमारे पास बहुत कुछ हो परंतु संतुष्टता ना हो तो जीवन में आनन्द नहीं आता। संतुष्टता के लिए अपनी इच्छाओं और कामनाओं को कम करते चले और ईश्वरीय खजानों से स्वयं को भरपूर करें। जो कुछ हमने 84 जन्मों में खोया है, उसे पाकर ही आत्मा संपूर्ण संतुष्ट हो सकती है। इसलिए बाबा से सब कुछ स्वंय में भरते चलो। हमारी संपूर्ण संतुष्टता ही संपूर्णता को समीप लायेगी।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं संसार की सबसे खुशनसीब आत्मा हूँ।

चारों युगों में मेरे जैसा खुशनसीब, मेरे जैसा भाग्यवान और कोई नहीं मुझे स्वयं भगवान मिले उन्होंने मेरे श्रेष्ठ भाग्य के द्वार खोले मैं ही यदि खुश नहीं होऊँगा तो भला और कौन होगा?

2 .योगाभ्यास - अ.पाँच स्वरूपों का अभ्यास करें अपने देव स्वरूप को याद करके आनंद विभोर हो जाएँ बाबा मुझे स्वर्ग की बादशाही देने आए है, इस स्मृति से अति प्रसन्न रहें मेरा जीवन प्रभु पालना में पल रहा है अपने इस महान भाग्य को याद करके खुशी में डांस करें। ब.बाबा हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है उनकी हजार भुजाओं की छत्रछाया मेरे सिर पर है।

3 .धारणा - खुश रहना और खुशी बाँटना

- मेरी खुशी बहुत मूल्यवान है और जीवन में आने वाली बातें मूल्यहीन हैं। संसार की कोई भी बात मेरी खुशी को नष्ट नहीं कर सकती। बातें तो आयेंगी और चली जाएँगी लेकिन मुझे अपनी खुशी को खोना नहीं हैं।

- सारे दिन में जो भी आपके संबंध-संपर्क में आएँ, उन्हें प्रोत्साहन व महिमा के दो वचन बोलकर खुशी अवश्य दें । अपने को ऐसी अलौकिक प्रसन्नता से भरपूर रखें कि आपको देखकर दूसरें भी प्रसन्न हो जाएँ।

4 .चिंतन - बाबा हमें सदा खुश क्यों देखना चाहते हैं? - खुशी क्यों गुम हो जाती ह? - कौन रह सकते हैं सदा खुश ?- खुशी के लिये बाबा के महावाक्य।

5 .तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों ! आओ, हम सभी संसार में खुशी की लहर फैलायें। अपने खुशी के महत्व को समझते हुए छोटी-छोटी बातो के प्रभाव से मुक्त रहकर मन को सदा खुशी से भरपूर रखें । ज्ञान चिंतन करते रहें कि बाबा मुझे सदा खुश देखना चाहते हैं इसलिये मुझे अपनी खुशी का आधार विनाशी वस्तुओं, वैभवों वाव्यक्तियों को नहीं बनना है। अपनी ईश्वरीय प्राप्तियों को याद करते हुए अपने को ऐसी अलौकिक खुशी में रखना है कि मेरी खुशी औरों के मुरझाये हुए चेहरों पर भी खुशी ले आए। मेरा खुशनुमा चेहरा परमात्म-प्रत्यक्षता का आधार बन जाए।

तपस्या-जो ....पेज 3 का शेष

अधिकारी बनेंगे उन्हें सभी की सहमति चाहिए।यह सहमति आजकल की चुनाव प्रणाली वाली नहीं वरन् सूक्ष्म सहमति है। ऐसी महान् आत्माओं को तो सच्चे मन से अपना राजा स्वीकार करेंगे। यदि यह योग्यता नहीं है तो राज्य-अधिकारी बनना सम्भव नहीं चाहे उन्होंने कितनी ही सेवा क्यों न की हो ?

इसलिए एक योगी को सबके दिलों पर राज्य करना होता है , सभी उसे सच्चे मन से सम्मान देते हैं। उसकी महानताओं के आगे सभी मन से झुकते हैं। सभी उसे सहज भाव से सहयोग देते है क्योंकि उसका सूक्ष्म सहयोग सभी को प्राप्त होता है। राजा सम्पूर्ण चरित्रवान होना चाहिए । चरित्रवान राजा के राज्य में आपदाएं नहीं आतीं ।प्रकृति भी उसका सत्कार करती है।प्राचीनाकाल में यह मान्यता थी कि राज्य में जो भी पाप-पुण्य होता है उसका 10 प्रतिशत राजा को मिलता है, राजा यदि पापी बन है तो राज्य में विपदाएं आने लगती हैं। बड़ा सूक्ष्म सम्बन्ध है राजा और प्रजा का । राजा यदि विलासी है तो प्रजा में विलासता शीघ्र ही फैल जाती है। साधना के पथ पर चलकर हम श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करते हैं। विषय-वासनाओं के त्याग के साथ - साथ श्रेष्ठ विचार , शुभभावनाएं सुखदाई वृत्ति, स्नेह की भावना आदि - आदि श्रेष्ठ चरित्र के मुख्य पहलू है। योग-तपस्या से दिनोंदिन इन धारणाओं में विकास होता रहता है। राज्य -अधिकारी सम्पूर्ण शक्तिशाली भी होना चाहिए । विवेक के अभाव में राजा अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करके दूसरों के प्रति कष्ट व अन्याय का कारण बन सकता है। इससे चारों ओर अराजकता फैल सकती है।, ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग में सम्पूर्ण कुशलता प्राप्त करके ही आत्मा विवेकवान बनती है। इसी प्रकार राजा जब शक्तिशाली है तो सभी उसके आदेशों का पालन करते हैं।

राज्य- अधिकारी बनने वाले को स्वयं में त्याग व सादगी का तेज भरना चाहिए। जिन्होंने यहां पुरषोत्तम संगमयुग पर स्वयं को त्याग से विभूषति नहीं किया , द्वापरयुग मे राज्य मिलने पर वे सहज ही धन-सम्पत्ति व साधनों के अधीन होकर भोगी - विलासी बन जायेंगे और इस तरह राज्यवंश नष्ट होते रहेंगे । साहस , धैयर्ता , निर्भीकता , शीलीनता और गम्भीरता जैसे गुण राज्य -अधिकारियों की शान है। जो व्यक्ति अधिकार पाकर अपने कर्त्तव्य को भूलते नहीं वही भविष्य में राज्य पाकर अपनी प्रजा की पालना के कर्त्तव्य से उपयुक्त नहीं होते । हम इस समय साधना से जन्म-जन्म के लिए अपने अन्दर महानताओं के बीज डाल रहें हैं। कैसे बीज स्वयं में डालें - यह स्वयं पर निर्भर है।

राज्य तो सतयुग का भी मिलेगा व त्रेतायुग का भी, दोंनो ही विश्व महारजन् भी कहलायेंगे । परन्तु एक ने ईश्वरीय शक्तियों से स्वंय को सम्पन्न किया है। तो दूसरे ने अत्याधिक सेवा की है। एक ने सतोप्रधान स्थिति को प्राप्त किया है तो दूसरा केवल सतो तक ही जाकर रूक गया। एक ने योग की साधना ज़्यादा की तो दूसरे ने ज्ञान ज़्यादा । एक ने वारिस तैयार किये तो दूसरे ने प्रजा । जो राज्य-अधिकारी अन्त तक जिस स्थिति तक पहुँचा उसे उसी समय का राज्य-अधिकार प्राप्त होगा जब प्रकृति की स्थिति उसके समान होगी ।

तो हे राज्य- अधिकारी बनने के इच्छुक साधको स्वराज्य अधिकारी बनकर यहीं पर सम्पूर्ण ईश्वरीय सुख प्राप्त करो। स्वयं पर संयम कायम करने वाला योगी ही सम्पूर्ण शक्तिशाली है। परन्तु वो व्यक्ति जो सुख-सुविधाओं के बिना सेवा की साधना नहीं करता, राज्य-अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता , क्योंकि वह यहां इन्द्रियों का गुलाम है और गुलाम वंश स्वर्ग का राज्य-अधिकारी नहीं बन सकता। अत: इस महान पद् के दावेदार बनने के लिए त्याग-तपस्या -सेवा और सादगी का जीवन बनाओं।

फतेहपुर-अरबपुर। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी साथ में ब्र.कु. नीरू ब्र.कु. राधा तथा अन्य।

नरेला। व्यापार मंडल के अध्यक्ष कृष्ण कुमार बंसल का स्वागत करते हुए शक्ति एवं ब्र.कु.गीता।

मोहाली। सर्वधर्म सम्मेलन में फादर सेबास्टियन बास्को, इमाम जनाब जुबीर अहमद, एचएस मान, हरीश मोंगा, ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु.रमा तथा अन्य।

सफीदो (हरियाणा)। एसडीएम उम्मेद सिंह मोहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.स्नेह।

बाजवा-वडोदरा। परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम संसार कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ.निरंजना,जयाबेन ठक्कर,सरपंच योगशभाई,अमित भाई, ब्र.कु.नरेन्द्र तथा अन्य।

दाहोद। महिला कार्यक्रम को दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए आई पी डी एस पारूल बा, ब्र.कु.सुरेखा, रंजन बेन ,अध्यक्ष नारी सरंक्षण, एडवोकेट ललीता, डॉ.अनु शाह, ब्र.कु. कपीला ।